

श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

ब्रजभाषा में

प्रेस भक्ति चन्द्रिका

श्री श्री वृन्दावनदास जी कृत ।



अर्थ सहायक—

गौरनिष्ठ श्रीमान् जगमोहनलाल जी श्रीवास्तव
मध्यभारत न्यायमंत्री (गवालियर)

प्रकाशक—

बाबा कृष्णदास,
कुसुम सरोवर, (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

प्रथमावृत्ति २०००]

सम्बत् २००७]

Rs.

॥ श्री श्री गौरांगविभु जयति ॥

ब्रजभाषा में

प्रेम-भक्ति-चन्द्रिका

श्री श्री वृन्दावन दास जी कृता ।

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।

हरे कृष्ण हरे राम राधे-गोविन्द ॥

भज—नितार्ई गौर राधेश्याम ।

जप—हरे कृष्ण हरे राम ॥

अर्थसहायक—

गौरनिष्ठ श्रीमान् जगमोहनलालजी श्रीवास्तव,

न्यायमन्त्री, मध्यभारत (ग्वालियर)

प्रकाशक—

बाबा—कृष्णदास,

कुसुमसरोवर (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

प्रथमावृत्ति १०००]
सम्बत् २००७

Rs.

दो शब्द !

श्री श्री प्रेम-पुरुषोत्तम कलि-पावनावतार श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु की असीम कृपा से यह "प्रेम-भक्ति-चन्द्रिका भाषा" नामक ग्रन्थ-रत्न प्रस्तुत होकर प्रेमी भक्त-जनों के कर कमलों में समर्पित है। इसका मूल ग्रन्थ बंगभाषा में है जिसको पूज्य-पाद श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशय ने समस्त शास्त्र तथा गोस्वामी-ग्रन्थों का सार लेकर सरल मनोहर भाषा में रचा था। श्रीमाध्व-गौड़ेश्वर सम्प्रदाय के गोस्वामी गणों द्वारा विरचित चार लाख ग्रन्थों का सार उक्त ठाकुर महाशय ने इस आठ पन्ने की पोथी में किस प्रकार रख दिया है सो उसको देखने पर ही पता चलता है। गौड़ीय वैष्णवगणों के नित्य पाठ का यह ग्रन्थ संचोप से सरल भाषा में समस्त ग्रन्थों के सार रूप माना जाता है तथा वैष्णव जगत में इसकी पूरी प्रसिद्धि है।

परन्तु यह ग्रन्थ बंगभाषा में होने के कारण एतद्देशीय भक्तों को उपयोगी नहीं हो सकता था। अतः आज से लगभग २०० वर्ष पहिले श्री वृन्दावनदासजी ने तदानिन्तन ब्रजवासी वैष्णवोंकी आज्ञानुसार सरल ब्रजभाषा के अनेक छन्दों में उसके उत्था रूप यह सुन्दर रचना की थी। यह ग्रन्थ हमें "इस विषम कलिकाल रूपी महा मरुभूमि में विचरण करने वाले तृषितजनों

को दैवात् सुधावृष्टि की तरह" अकस्मात् मिल गया है । गून्थ रचयिता वृन्दावनदासजी के बारे में कोई विशेष बात हमें उपलब्ध नहीं है । सम्प्रति खोज में हमें और भी इनके द्वारा रचित "भक्त-नामावली" तथा "विलाप कुसुमाञ्जलि" ब्रजभाषा में मिले हैं सोभी प्रकाशित हो रहे हैं । बाबा बंशीदासजी कालिदह वालों से सर्व प्रथम यह पुस्तक प्राप्त हुई । अतः हम उक्त बाबा महाराज के आभारी है । उपरान्त श्री बाबा केशवदासजी भागवतनिवास रमणरेती के प्रगाढ़ अनुसन्धान से श्री वृन्दावन में पूज्य गोलोक धाम प्राप्त श्री राधाचरण गोस्वामी महोदय की लाइब्रेरी से भी यह गून्थ प्राप्त हुआ है, अतः हम उक्त लायब्रेरी के अध्यक्ष श्री गोस्वामी अद्वैतचरणजी (बच्चूजी) तथा परम प्रोत्साहनकारी पूज्य गोस्वामी श्री दामोदरलालजी (वृन्दावन) महोदय के प्रति भी आभारी हैं ।

विनीत—

बाबा कृष्णदास,
कुसुमसरोवर, गोवर्द्धन ।

प्रेमभक्ति चंद्रिका भाषा

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
श्रीचैतन्यमनोभीष्टं स्थापितं येन भूतले ।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम् ॥२॥

दो०—भावराधिका माधुरी आस्वादन सुखकाज ।
जयति कृष्णचैतन्य जय कलि प्रगटे ब्रजराज ॥३॥
कलि प्रगटायो कृष्ण जिनि सीतापति मम ईश ।
जयति जयति अद्वैत प्रभु दें पदरज मम सीस ॥४॥
भूमि प्रेम ब्रजभूमि महि जिनकौ निलय अनूप ।
रूप सनातन वरनि हों जानि सनातन रूप ॥७॥

सोरठा—दास नरोत्तम जानि सुखद नाम अभिराम शुभ ।
जग जिहिं ठाकुर ठानि बहुरि महाशय भनत भल ॥६॥

सोभा०—तिन करुणालय भारी । दीन जननि हितकारी ।
लखि लखि जीयनि जाला । कलिमल मलिन विशाला ॥

विषई कुटिल अभागी । उलट वट अनुरागी ।
 तिहिं मधि जे पुनि आछै । ठरे कर्म के पाछै ॥८॥
 तिनहूतें जे आगे । ज्ञान माँहि ते पागे ।
 विषई कर्मठ ज्ञानी । नाहिन हरि पद ध्यानी ॥९॥
 निज निज मत लै ठाने । परम तत्व नहिं जाने ।
 तिन के हित हित कारी । निज चित मया विचारी १०
 बहुरि विचारि सु ऐसैं । सब कौ खेम सु जैसैं ।
 पंडित जे सु प्रवीना । मूरख वितपति हीना ॥११॥
 अस रचना रचि कीजै । सब कैं सुगम पतीजै ।
 यहैं धारि तिहि पाछै । श्रुति पुराण मथि आछै ॥१२॥
 कर्म धर्म बृत भेवा । ज्ञान ध्यान अनदेवा ॥
 तजि दीने निरधारा । कीने हरि पद सारा ॥१३॥
 हरि पद प्रीति सुजोई । वर पुरुषारथ सोई ।
 ताहि गाउँ बरवानी । सुघर मधुर सुखदानी ॥१४॥
 तामें भरि अभिलाषा । लै गाई करि भाषा ।
 प्रेमचन्द्रिका नामा । भयो ग्रंथ अभिरामा ॥१५॥
 मनहुँ प्रेम रस जोई । मूरतिबंत जु सोई ।
 ग्रंथ रूप सरसांही । प्रगट भयो धर मांही ॥१६॥
 सुनत नाम पुन जोई । तुरित रहें नहिं कोई ।
 तनक भनक में जानौ । छके प्रेम नर मानौ ॥१७॥

सुघर मधुर जे गाये । प्रेम कौ जु भर लाये ।
 जे लै उच उचारे । आप तरे जग तारे ॥१८॥
 कंठ पाठ जे राखे । तिहि पद सुर अभिलाखे ।
 ते निरभै जग मांही । कालउतें डर नाहीं ॥१९॥
 धनीं अपन पै जानै । सुरपति रंक बखाने ।
 आन धर्म बृत आने । तृण समान अनुमाने ॥२०॥
 भुक्ति नरक सम देखी । मोच्छ तुच्छ करि लेखी ।
 हरि हिय देखे आछैं । हरि विचरे तिहि पाछैं ॥२१॥
 उत्तम मध्यम जोई । अधम रह्यौ नहिं कोई ।
 भये त्रिविध नर नारी । प्रेम भक्ति अधिकारी ॥२२॥
 प्रेम चन्द्रिका भारी । ग्रंथ जु मंगल कारी ।
 महिम अमित निरधारा । क्यों हूँ बार न पारा ॥२३॥
 जग जन के मनभायो । उद्धि अंतलों छायो ।
 सुनि वृन्दावन बासी । हरिवल्लभ सुख रासी ॥२४॥
 बढीं अमित अभिलाषा । ऐपै सुगमन भाषा ।
 तब निदेश सुखकारी । निजभाषा हित भारी ॥२५॥
 मोहि मया भरि आछैं । करि बोले तिहि पाछैं ।
 लसैं अर्थ जिमि यों हूँ । पलटै वानीं क्यों हूँ ॥२६॥
 अस रचना जब कीजै । हमरे सुगम पतीजै ।
 सुनि निदेश रुचिकारी । बढ्यौ मोद मम भारी ॥२७॥

दोहा-हरि उमंग हिय रंग भरि धरि निदेस पुनि सीस ।
 बहुरि सुमिरि पद विमल अति सीतापति निजईस ॥
 प्रेम-भक्ति-रस-चन्द्रिका सुखद नाम रस धाम ।
 ताहि सुप्रेम प्रकाशनी रचत ग्रंथ अभिराम ॥२६॥

—:❀:—

अथ ग्रन्थारम्भः ॥

सो०-गुरु पद पंकज जोहि कोमल विमल सुवास अति ।
 भक्ति सद्य सुठि सोहि वर आदर वरनहुं प्रथम ॥३०॥
 जिहि प्रसाद दृढ़ पोत अहो भ्रात अवदात मति ।
 चढ़ि तरियै भव सोत हरि पद हौंहि उदोत पुनि ॥३१॥

गुरुवर मुख सरसिज मधुवानी । मादिक मधुर सरस सुखदानी ॥
 मति मधुपहिनित तहँ दृढ़वासा । भूलि करहु जिन जिय अनआसा ॥
 गुरुपद पल्लव परम सुहावन । पावन रीति नीति मन भावन ॥
 ता में रति अति गति अभिरामा । जिहिं प्रसाद पूज मनकामा ॥

दो०-जनम जनम निज ईस मम जिन दीने दृग दोइ ।
 अघट ज्ञान घट महि प्रगट कीनौ करुणा भोइ ॥
 प्रेम भक्ति परकास जहं नसैं अविद्या रास ।
 जासु सुजस निस दिन रटहिं श्रुति पुरान इतिहास ॥

गुरुवर करुणा सिंधु अगाधा । दीन बंधु पूरक मन साधा ।
 लोकनाथ लोकनि निरधारा । इम राजत जिम प्राण अधारा ॥
 हा हा प्रभुवर मयासु कीजै । निज पद पल्लव छाया दीजै ।
 वदत तिलोकी नभ सुख कंदा । प्रगट होय तुव अस जस चंदा ॥

पद पराग हरिजन निज भूषण । सजहु तजहु अनगन तनदूषण ॥
 नित विचरहु तिन ही के पाछैं । जाते नव नव अनुभव आछैं ॥
 मार्जन भजन होय मन रंजन । सज्जन के संगति भव भंजन ॥
 तब अज्ञान अविद्या लाजै । सूर निरखि जिमि कायर भाजै ॥
 रूप सनातन जै सुभकारी । प्रेम भक्ति रस भूपति भारी ॥
 जुगल विमल सुचिमयवपुअनुपम । अमल रुचिर रुचकरुणालयसम ॥
 जिहिं प्रसाद अति हरषित तनमन । भूले भव बाधा जन अनगन ॥
 दीन दुखी पतितन के काजै । प्रगट अघट सुरद्रम जिम राजै ॥
 दसधा रीति पुनीति सुहावनि । निज निज ग्रंथनि में मनभावनि ॥
 वरनैं भरि हित चित पुन सोऊ । अति रसाल विशाल मतिदोऊ ॥

भनक सुनत ही तनक जिहि लहै मोद निरधार ।

जुगल विमल उज्ज्वल सुरस लसै सरस आधार ॥

जुगल प्रेम अति स्वच्छ सु ऐसैं । लक्षवान कलधौत सु जैसैं ॥
 धनि असधन जे हिय हरषाही । कीनै प्रगट अघट धर मांहीं ॥
 ज जै जै श्री रूप सनातन । लै पोखहु तोषहुं जु यह धन ॥
 यहै रतन भरि जतन अपारा । निज उर महि धरि हों करिहारा ॥
 विदिस भागवत मरम सु जोई । नवधा भक्ति धर्म सुठि सोई ।
 बिन छेवा नित सेवा करिहों । यहै नेम नित खेम सुमिरिहों ॥
 आन देव ढिग कबहुं न ढरि हों । अपनी देव तें जु नहिं टरिहों ॥
 कही जु बात भ्रात मन दीज । वर कारण यह तत्त्व पतीज ॥

संत रु ग्रन्थ गदित गुरुदेवा । जानि मानि हिय महि सम भेवा ॥
 प्रेम वारि मांही मन खोलैं । करत रहों दिन रैन कलोलैं ॥
 भक्तिहीन जे ज्ञानी करमठ । मन क्रम लै तजि हों सु जानि सठ ॥
 सुनउ नरोत्तम नित हित काजै । यहै तत्व हिय मांहि सु गाज ॥

तजि अभिलाषा आन अरु ज्ञान कर्म पुनि जोई ।
मन बच काय सुभाय भरि हरि भजि हौं रसभोई ॥
तजि देवा देई भजन संत—संगति हरि रूप ।
शक्ति करी सुठि भक्ति यह कारन परम अनूप ॥

विदित महत जन मारग जोई । सुगम सुलभ निहकंटक सोई ॥
करि विचार पूरव-पर ढरि हौं । तिहि मगते पग अनत न धरिहौं ॥
तजि अवगुन सजि भजि सुठि सीला । साधन गुनगाहन हरिलीला
नित प्रति प्रीति रीति भर जैसैं । मन वच क्रम करिहौं ल तैसैं ॥

असत संग बहुरिहु अनगीता । सठ करमठ ज्ञानी दुरि नीता ॥
लाख जतन करि दूरि हि राखै । जौ सतसंग रंग अभिलाखै ॥
सत संगत ही में अनुरागै । दशधा भक्ति सुधारस पागै ।
गावत लीला मधुर सुधावन । सुवस बसै ब्रजपुर मन भावन ॥

जोगी जंगम करमठ ज्ञानी । अन्यदेव पूजक अरु ध्यानी ।
अनरथ मूर कूर दुख दाई । दूर करहु छबि पूर सदाई ॥
कम धर्म दुख सोग अपारा । आन जोग पुन जे निरधारा ॥
जानि मानि दुखकारी भारी । तजउँ भजहुँ नित निरवर धारी ॥

तीरथ ब्रत मांही श्रम जोई । मन अटकन भटकन श्रम सोई ॥
नव गोविंद चंद अभिरामा । सकल सिद्ध जुग पद सुखधामा ।
सजि सजि दृढ़ विश्वास सु आछैं । तजि तजि मदमत्सर तिहि पाछैं ॥
सुनिसुनि नितप्रति निज हित बाणा । भजन अनन्य करहु सुखदानी
हरि हरि करि संगत हरिजन । निरखिनिरखि पुन हरवल्लभतन ॥
श्रवनरु कीरंतन सुभकारी । तहां रुचिर रुचि श्रद्धा भारी ॥
अरचन अरु सुमरन पुन ध्याना । नवधा भक्ति जोग सुठि ज्ञाना ॥
धरि धीरज निरधार जु धारन । यहै भक्ति है परम सु कारन ॥

निज इन्द्रिय गण में हरि सेवा । तजि अरचन अन देई देवा ॥
यहै अनन्य भक्ति रसवानी । जानत बड़भागी सुख दानी ॥

उपालम्भ गन धीर दंभ रोस परकास जहं ।
निरखि बदै हिय पीर हरषि तजहु किन सुमतिवर ॥
हैं इन्द्रिय जिहि भेव अस रिपु गन वपु महि सुनहु ।
गहि गहि निज निज देव सबल परसपर नित लसैं ॥

सुनि न सुने ये कान सु एसैं । जानि प्राण अनजान सु जैसैं ।
धार धार सिख दीनो मैं हूँ । करि न सकैं दृढ़ निहचै क्यों हू ॥
लोभ मोह पुन क्रोधरु कामा । दंभ सहित मद मत्सर नामा ॥
धाय चाय अपनाय जु ल हौं । ठौर ठौर पुनि ठौर जु दैहौं ॥
निरखि निरखि नित हिय हरषांही । जीति मीति रिपुगण वपुमांही ॥
सुमरि सुमरि हरि पद जुग जोई । तजि अयास भजि हूँ पुनसोई ॥
अरपि कर्म हरि सेवा महि सुनि । क्रोध भक्त जन दोषी महिपुनि
लोभहि ठौर और अन नांही । सत संगति हरि गाथा मांही ॥
इष्ट लहन विन छिन पल जोई । मोहि मोह थल भायो सोई ॥
मद हरि गुण गन गान सु मांही । लै धरिहौं जित तित हरषांही ॥
नांतर सुवस बसै जौ कामा । अति समरथ अरु अनरथ धामा ॥
यहै प्रेत दुख देत जु एसैं । भक्ति सुगम पग कंटक जैसैं ॥७०॥
काम क्रोध हूँ सकैं न कोई । बाधक वे जन साधक जोई ॥
दुर्लभ हरिवल्लभ संगति रस । जौ पे सरस मिलै जु भागवश ।
हहा क्रोध भरि कहा न करई । को कोविद तिहि मग पग धरई ॥
तजहु ताहि नित प्रति पुन आछैं । लोभरु मोह कौं जु तिहि पाछैं
करिराखहुँ षट्रिपुजु तुच्छअति । निजमनके सुअधीन स्वच्छमति ॥
नव गोविंद चंद जिय जी कै । सुमिरि सुमिरि पद पल्लव नीकैं ॥

आपहि आप पाप रिपु गन तब । सुनिसुनि नव गोधिंदप्रवररव ॥
तजि हैं ए भजि हैं पुन ऐसैं । केहरि डर करिनिकर सु जैसैं ॥
नसै बिपद गन अमित अपारा । लस जु सुख संपद निरधारा
करहु मीति करि प्रीति जु धारन । प्रेम भक्ति सुठि परम सुकारन ॥
असत क्रियासु छाडि अन छलबल । तजि अनरीतिरु नीति मंदभल
सुमति सुनहु पुन जे अनदेवा । भूलि करहु जिन रति मति सेवा
निज निज थल ही में मैं जानी । प्रीति रीति की खैंचातानी ॥
कबहु न पूजे तन मन साधा । चलत भक्ति मग पग-पग बाधा ॥
अपन भजन मग सुभग सुहावन । उमगि उमगि चलिहौं मनभावन
इष्ट देव चरननि सुचिकारी । लीलागान में जु रुचि भारी ॥

नैष्ठिक भजन सु तंता । अहो भ्रात रसवंता ।

तोहि कह्यौ जु इकंता । साखि जहाँ हनुवंता ॥

गगन बसैं जे सगन देवगन । बहुरि पितरगण लसैं जु अनगन
भरि उमंग सुख रंग हि साँचैं । साधु साधु भाषत पुन नाच ॥
जुगल उपास कहैं जन जेई । प्रेम उदधि मधि मगन जु तेई ।
यहै तिलोकी सुनहु मित्रवर । ल वारहु तिहि चरन कमल पर ॥
प्रथक अयास जोग पुन जोई । है दुख मैं बिष भोग जु सोई ।
हरि सेवन जु सुधारस नीकैं । सुवस बसहु ब्रज महि नित पीकैं
हरि गुन कथन बहुरि हरि नामा । सत्यजु सत्य सुखइ रमधामा
ब्रज जन संग रंग रस पाग्यौ । विचरहुँ सोहन गोंहन लाग्यौ ॥
हरि सेवा महि सुचि रुचि कारी । लाख लाख अभिलाखजु भारी
है निरभै जिय करि दृढ़ आशा । गहि मन में पन दृढ़ बिश्वासा
वदत नरोत्तम इमि मनवच क्रम । दर्यौ नाथ मैं भरि जु असतभ्रम
अब जु हाहा खात किरोरनि । तारहुँ प्रभुवर निजदग कोरनि ॥

तुमही करुणासिंधु अरु अधम बंधु प्रभु मोर ।

करहु नाथ इहि ओर कहूँ दीन जानि दग कोर ॥

काम गाह के मुख परयौ भोरैई भहराय ।

करहुँ त्रान अब प्राणपति क्यों हूँ आयजु धाय ॥८७॥

सकल जनम भरि हे गिरधारी । भयो जु मैं अपराधी भारी ।
निपट जु रीति अनीति सु लीनी । कपट रहित नहि सेवा कीनी
जदपि हौं जु अज्ञान रु दुरमति । तदपि प्राणपति तुमहीं में गति
मोहि तजउ जिन मो सम नाहीं । दीन अधम तम यह जग मांही
पतितनि पावन नाम सुहावन । रटत स्याम तुव जन मन भावन
अब निहचै यह जानत मैं हूँ । तजे नाथ गति नाहिन क्यों हूँ ॥
हों अपराधी जदपि अगाधा । तदपि नाथ तुव पद मन साधा ।
सत्य सत्य है सती सु जैसैं । प्रेमवती पति के पद तैसैं ॥
अहो नाथ तुम परम देववर । तजहु मोहि जिन हों निज अनुचर
चाइनि सौ धरि पाइनि सीसा । कहत सुनहु मम प्राननि ईसा ॥
जौ अपराधी हौं जु अपारा । तदपि नाथ तुमही निरधारा ।
दे सेवा बिन छेवा प्रभुवर । करि राखहु पद पंकज मधुकर ॥
भयो काम बस चित दिन रैना । सुनत न नितप्रति निज हितबैना
असत मनोरथ छुटें न क्यों हूँ । रचि पचि हारि रह्यौ प्रभु मैं हूँ ॥
तुम तौ जिमि सरद्रम निरधारा । मोहिकरहु प्रभु अंगीकारा ।
जग में हूँ अघटरु अधिनासी । प्रगट होइ तुव करुणारासी ।
देखहु हरि तिय लोक सुमांही । मोसौं अगति पतित अरु नाहीं ।
धरहु नाम अभिराम सुभारी । दास नरोत्तम पावन कारी ॥
रटहि नाम तुव जग जन जैसैं । पतितनि सुगति स्याम घनएसैं
सुदृढ़ आस परकास जु भारी । करहु दास निज गिरवरधारी ॥
दुखित नरोत्तम जग महि भारी । करहु सुखी प्रभुवर सुखकारी ।

भूमि रु भूमि रहौं तन मन में । तुमरौ भजन रु कीरंतन में ॥
 ता में विधन न होय सु जैसैं । नित प्रति धरकत गात जु ऐसैं ।
 भरि भरि दृग भाषत अब सोई । छिन छिन अरु पलपलपुनजोई
 आन कलेश लैस अनगाथा । नाहिंन जहँ तंद जैहों नाथा ॥
 नित प्रति चित महिनिज हित काजै । तुम्हरे पद सुमरन सुठिराजै
 अविरत अरु अविकल पुन नीकैं । जे तुम्हरे गुनगन जियजीकैं ।
 नित प्रति संत सभा मधि रुरौ । गान करत दिन करिहौं पूरौ ॥
 आन दान व्रत आन सु जोई । तनु समान अनुमान न होई ।
 सेवा आनरु देवा दूजा । भोरैं उ नहीं करिहौं पूजा ॥
 हा हा हरि हरि भाषत भाषत । नाम सुधा कन चाखत चाखत ।
 नित विचरहु अति हरिषत तन में । दूजीवात न होय जु मन में
 जीवन मरन में जु एक गति । नव राधा गोविंद प्राणपति ।
 जुगल प्रीति मुख सरस सुधासर । ता में भगन रहौं निसवासर ॥
 जुगल उपासक जे निरधारा । हैं मेरैं ते निज उर हारा ।
 असवानी रसदानी जोई । बसहु लसहु हिय मांहि जु सोई ॥
 जुगल चरण सेवा अति निरमल । जुगलविमल पदप्रच्छालनभल
 जुगल विभल हिय प्रीति सु जोई । है निजु प्राणप्रतीतिजु सोई ॥
 जुगल स्वच्छवर रूप सु ऐसैं । लच्छयकाम रति भूपति जैसैं ।
 लीला ललित सधारस अनुपम । भयो चहत मन बेला बल सम
 हा हा जुगल किशोर किशोरी । जग जन मन भावनि शुभ जोरी
 तुव पद में विनती बहु भांतनि । हौं जु करहु गहि गहि तनदांतनि
 स्याम धाम ब्रजराज कुंवरवर । कुंवरि बहुरि वृषभान नामकर
 जदपि नाम जुग सरस सुहावन । राधा नाम सु अति मनभावन
 मरकत मुकर रुचिर स्यामघन । सौन केतकी सुमरि कुंवरितन ।
 सोभा सरस सदन छवि भारी । कोटिमदन मद भंजन कारी ॥
 नव नागर वर कुंज बिहारी । नदन कला चतुरा सुकुमारी ।

सांन मान सुर मधुर सुहावन । जुगल विमल गुण जुगमनभावन
 सोभा सदन वदन छवि भारी । पीत-नील दुति सुचि रुचिकारी
 हाव भाव चित चाव अपारा । भूषण निरदूषण निरधारा ॥
 नील रु पीत बसन तन सोहन । गोरी भोरी स्याम सु मोहन ।
 जुगल चाव हिय भावन जोई । सोभित तन लोभित मन दोई ॥
 रतन जटित भूषण मन मोहै । सदृश अंग प्रति अंगनि सोहै ।
 सोभा सिंधु अगाध अपारा । चकित नरोत्तम लखि निरधारा ॥
 गान करहु गुन अनगन निशदिन । प्रेममगन हृसितमन छिन र
 यह अभिलाषा है हियमहिअति । सुनहु कहूँ दै कान प्राणपति
 राग भजन मग जोई । हैं निज संमत सोई ॥
 सोव कहत निरधारा । लोक वेद मधि सारा ॥११६॥
 अलि अनुगा सुभगा सु है लहि ब्रज महि सिधिकाय ।
 वहै भाय अरु चाय में निज जियरा सचुपाय ॥११७॥
 श्री राधिका की जु सहचरी । अनगन राजति हैं रसभरी ।
 मुखियनि कौं कहि हौं अभिरामा । ललिता बहुरि विसाखानामा
 चित्रा चंपलता जु ललित गुन । देवी रंग रु सुदेविका पुन ॥
 तुंग इन्दु लेखा तिहि पाछैं । अष्ट सबी मैं लखी जु आछैं ।
 नित प्रति संग रंग अनुरागैं । हरिलीला जु सुरस रस पागैं ॥
 नर्म अली रंगरली सु जेई । सुन हु मीत करि प्रीति जु तेई ॥
 रूप मंजरी परम अनूपा । बहुरि मंजरी रति रस रूपा ॥
 श्री लवंग मञ्जरी जु नामा । मंजुलालि पुन सुनि अभिरामा ।
 सरस जु रसमंजरी संग करि । श्री कस्तूरी आदि रंग ढरि ॥
 भरि कौतुक हरि कौं जु पतीजै । सेवहि सुवस प्रेम रस भीजै ॥
 ह अनुगा इनकी विन छेवा । लै हौं जांचि सु दसधा सेवा ।

भूमि २ अरु भक्ति २ लाजनि । समझिहौं जुग कोरहि काजनि ॥
जगमग रूप अनूप गुन पगैं । भरि सुहाग अनुराग रगमगैं ॥
अखिन मांहि चलि करि हौं वासा । तब ही पूजै तन मन आसा
श्रीवृन्दावन माहि समै समुझि सजि अलिन मधि ॥
वैठाऊं हरषाहि जोरी सुभग सुहावनी ॥१२५॥

कामोल्लाल छंदः—

सुनि कब करि हैं इहिं और कहूँ द्रग कोर जु करि सनमान अलि ।
अब लै २ चौर सुहारि हौं मुख दै द वीरी पांन चलि ॥१२६॥
जुग अमल कमल पद टहल भल नित पल २ अविकल सुमिरकैं ।
भरि भाग सुहाग अनुराग बस ढिग रहि हौं कुंवरि अरु कुंवरकैं ।
है साधन माहि जो भावना तन सिद्धि मांहि सो पाइयै ।
भरि भाय चाय चितलाय इम मग राग उपाय जु गाइये ॥
जिहि काचै साधन भनत भल भरि प्रेम पकैं करि प्रेम गनि ।
यह भक्ति सुलछन को जु अब सुठि तत्व सार निरधार भनि ॥
तन सिद्धि रिद्धि सो पाइयै धन साधन में जो चाहियै ।
करि पक्व अपक्व सुकहत जिहि सोइहि थल भल अवगाहियै ॥
इम बदत नरोत्तम दास पुनकहूँ मिलै विमल मम भाग अस ।
हरि ब्रज पुर में भरि हरष हिय नित सुवस बसौं अनुराग बस ।

जब लिखि हैं लखि अलिनि में मोहि मया अति भोय ।
तब पूजै अभिलाष मम लाख लाख विधि जोय ॥१३२॥

अमल जुगल पद कमल विराजै । परमानंद कंद सुख साजै ॥
हैं मेरै जिम जीवनि जो कैं । रति प्रेमा तहं होहूँ जु नीकैं ॥
स्यामा स्याम नाम अभिरामा । है जु उपासक कौ रसधामा ॥
नाइ सीस जुग चरननि मांहि । उमगि उमगि रति हौं हरषांही ॥

जुगल ललित रस केलिसु जो है । मधुर २ हूँ तैं अति सोहै ।
ताकौ पुन सुमिरण जु सदारै । मन श्रवण रु प्राणनि सुखदाई ॥
साधन साधि इहै अब जानहूँ । जानि मानि हिय आनन आनहूँ ॥
यहै तत्व पुन है निरधारा । सकल सिद्धि मांहि सुठि सारा ॥१३६॥
नव अंबुद सुन्दर दुति राजै । मधुर मधुर हूँ तैं जु विराजै ॥
वैदग्धी वर अवधि सुहावन । जगमग सुभग वैस मन भावन ॥
कोटि में नैननि सुखकारी । बनवारी पीतांबर धारी ॥
जगर जगर मनि भूषन राजै । मोर मुकुट पुन सीस विराजै ॥
मलयज अरु कुँ मकुँ म पुन मृगमद । अंग २ रचनाजु रचितहद ॥
मन मोहन मूरति अतिरङ्गा । नट नागर वर ललित तृभंगी ॥
नव पहुपनि की माल सुहांनी । मनमानी अति ही जुनिमानी ॥
राजत उर मांही सुठि सोभित । मत्त जहं मधुकर मधु लोभित ॥
मृदु सुसिक्क्यान मधुर सुधासम । वैदग्धी लीला पुन अनुपम ॥
नव गोविन्द नवल छविधारी । निरखि निरखि मोहत ब्रजनारी ॥
रतन जटित नूपुर पग सो हैं । तिहिं उपमा कौं जग माहि कोहैं ।
मति अनुसार सुनहुँ सुखकंदा । राजहि नभ जिम जुग नवचंदा ।
धुनि नूपुर जिम किलक मराला । हैं जु हंसिनी ब्रजकुलवाला ॥
सुनि २ कैं पुन पुन अकुलाही । रहिन सकैं निज निज घर माही ॥
रति बाढ़ै अति ही चित मांही । लोक लाज कुल कानि नसाहीं ।
आय मिलैं हरि कों हरषांही । सती लहैं जिम पति सचु पांही ॥

सदा सत्य गोविंद वपु नित्य बहुरि तिहि दास ।
वृन्दावन धर सघर अति जगमग जोति प्रकास ॥१४५॥

सुठि सीतल सुखछ करकारी । लच्छ जु कलप वृच्छ गुन धारी ।
द्र मवल्ली राजत पुन ऐसैं । पटरितु मूरति वंत सु जैसैं ॥
नव गोविन्द चंद अभिरामा । परमानन्द कन्द रसधामा ॥
जुबति वृंद ढिग अति रस रूपा । सोभा मधुर विहार अनूपा ॥

भरि उगंग अतिहास रङ्ग रस । दरि कौतक सेबाहिं सु प्रेमवस ॥
 ललित विहार सरस सुठि सोहै । निरखि २ मुनि गन मन मोहै ॥
 ब्रज जुवतिनिके करि निरधारा । चरण सरण जानहु सुठि सारा ॥
 निसदिन दृढ़ निहचै सरसायै । रे मन भजन करहु हरषायै ॥
 तजि हु आन संवाद सुजोई । बहुरौ वाद विवाद जु सोई ॥
 जानिमानिविष सम जनिचाखहु । प्रेमसुधारसहियभरिराखहु ॥
 पाप रु पुन्य की 'जु है काया । जानि अनित्यकरहु जिनिमाया ॥
 करि निहचै मनक्रमअभिरामा । तजहुधंध जन धन अरुधामा ॥
 मरि जैहौ कित सौ मन मांही । जानि बहै दुख की सुधि नांही ॥
 ऐसो ज्ञान कौ जु है टोटौ । नित प्रति कर्म करत पुन खोटौ ॥
 जिमि नरपति कौ राज बखानै । नटन कला नटकी पुन जानै ॥
 अस धनधाम समभि हिय मांही । देखतही देखत कछु नांही ॥
 अस माया कर जो घर मांही । तिहि सम परम ईस अरु नांही ॥
 जौ निज खेम मांहि अभिलाखै । तासौं मन नित प्रति डर राखै ॥

पाप करहु जिन सुमति वर है संताप सु मूर ॥

अधम कूर पापी जु नर ताहि करहु नित दूर ॥१५५॥

पुन्य धाम सुख जाहि गनिज्जै । भोरे ऊ नहिं नाम भनिज्जै ॥
 बहुरि नीत कारि प्रीनि पतिजै । भुक्ति मुक्ति दोऊ तजिदीजै ॥
 दसधा भक्ति जु सुरस सुधासर । तामें मगन रहौ निसि वासर ॥
 इहिंविन आन गान पुन जोई । खार समुद्र निरधार जु सोई ॥
 लसै मोद हिय मांहिजु निस दिन । नसै तापसुनि अनगनछिन २
 परम तत्व जिहिं मीत भनत भल । तिहिं उपाय गायौ लैनिरमल ॥

आन परस पुन जोई । जिहिं विधि होइ न कोई ॥

तामें हे सुखदाई । हो हु सु चेत सदाई ॥१५६॥

सुखद नाम हरि राधा । गान करहु विन बाधा ॥
 परम ध्यान पुनि सोई । आन प्रमान न कोई ॥
 करमठ ज्ञानी जेई । भूठे भक्त जु तेई ॥
 ता में हे बडभागी । हो हु न तूं अनुरागी ॥
 शुद्ध भजन पुन जोई । परम पुनीत जु सोई ॥
 ता में चित दै आछै । सुनि निज हित तिहि पाछै ॥
 ब्रजजन चरित सु जोय सुठि अनुरागी होहु तहं ॥
 परम तत्व धन सोय जानि भ्रात अवदात मति ॥
 सुद्धभाय भरि जाचिहौं दसधा गाथा जोय ।
 मंत्र नाम अभिराम जुग जानि अभेद जु सोय ॥
 हेत करहु पुन नेत विन अमल कमल पद मैं जु ॥
 ह्वै हैं छेद सुखेद विन ग्रंथ पाप जे हैं जु ॥१६५॥

मोहन सोहन छंदहि गाव हूँ । हरि राधा चरननि बल जावऊं ॥
 सुनि २ पुनि २ नाम संत मुख । नितप्रति चित लहि हैं जु परमसुख ॥
 जानरूप सम गात जु गोरी । नवल अमल छवि नवलकिशोरी ॥
 दरसन हित नैननि अभिलाखै । रुदन करत छिन छिन दुखचाखै ॥
 नव अंबुद अति दुति सुख धामा । अंग २ सोहन अभिरामा ॥
 वदन कोटि मद मदन सु नास । रूप अनूप सु जग परकासै ॥
 चहूँ और सेवहिजहूँ अलिगन । भरि भरि हियअभिलाषसुअनगन ॥
 सोभा सुख अति अमित अनंता । जानत हैं सो रसिकइकंता ॥
 वदत नरोत्तम हरषित तन में । इम भावत अब मेरे मन में ॥
 नित प्रति अस रस सरिता मांही । मगन रहौं छिन २ हरषांही ॥

नाहिन कहि हौं आँन पुन हरि राधा करि ध्यान ।

सुपने हूँ नहि चहतु अन दसधा विन सज्जन ॥१७१॥

जुगल प्रेम अति स्वच्छ जु ऐसै । लखवान घर हेम सु जैसै ॥
तामें पुन दरि हौं भरि आरति । प्रीति रीति रस नीति संभारति
कवित्त-जल विन मीन दीन जलद विन चातक औ जैसै
ही मधु विन मधुपलै ठानियै । चंद विन चकोर औ पति
विन सती जैसी ज्यों ही रंक चित्त पुन वित्त हितमानियै ।
छिन छिन छीन अरु दीन दुख लीन तौऊ एक प्रीति
रीति नीति एक ही बखानियै । तैसी रति मति अरु टेब
भव चाब भाव ऐसी गति प्रेमी की सुप्रेम विन जानियै ॥

विषै विषम विष रम जगमांही । है कलेस सुख लेस जु नांहीं ॥
सुनहु धीर धरि धीरज धारहू । बहै जु सुख दुख करि निरधारहू ॥
हरिबल्लभ संगति नित ठान हूँ । हरि पद प्रीति सुरस रस मानहूँ ॥
प्रेमभक्ति पुन परम अनूपा । जानहु सत्य सनातन रूपा ॥
बीच बीच हैं नीचरु भूठे । करि दूषन हूँ रहै जु रूठे ॥
कुमति कूर सद गुन नहि मानै । गुनगन में औगुण लै ठानै ॥
नव गोविन्द मुख जन जोई । अस धन ताहि फुरै नहि कोई ॥
परम तत्व को मरम न जानै । रीति अलोकिक लोकिक मानै ॥
सठ दोषी रु जै सुज्ञान हत । लहै न संतनि को जु सुद्धमत ॥
भरि अभिमान आन नहि जानै । नहिन अपन पे कौं पहिचानै ॥
भक्तिहीन अभिमानी जेई । दीन दुखी जग मांहि जु तेई ॥
करहि भावना अमित सु जोई । निरअरथक जानहु सब सोई ॥
जानि जानि हरि परम सुईसा । मानि मानि धरि तिहि पद सोसा
तजि तजि आन अयास सु जोई । भजिभजि प्रेमआस प्रभु सोई ॥

एकही सु ब्रजपुर पुर आगर । नव गोविंद रसिक वर नागर ॥
सदा करहु तहं संगलकारी । लाख लाख अभिलाष जु भारी ॥
बदत नरोत्तम इम अकुलांही । अस हरिजन जे हैं जग मांही ॥
हा हा तिनकौ विरह अनलवल । बरिवरि जांहि प्राण मम पलपल
निज अभाग की अवधि सुनांहीं । भयो मगन मैं मिथ्या मांही ॥
दुख अनेक सुख नेक न तन में । जागि रह्यो यह आगि जु मनमें ॥

दो०—वाक अवेद सुभेद जिहि चृन्दावन सुखधाम ।
धनि धनि प्रेमानंद धनि प्रगट जहां अभिराम ॥
सत्य नित्य सुख पीन अरु जरा मृत्त दुख हीन ।
श्री वृषभान कुंमारि हरि ललित केलि रसलीन ॥१८५॥

हरि राधावर प्रेम सु ऐसै । लखवान सुठ हेम सु जैसै ॥
जिहि तरंग है जु रस सागर । को समझे विन रसिकन आगर ॥
सरस दरस हित जुग मुख विधुवर । जिमि चकोर दृग प्राण परस्पर
ध्यान धरहि जिहि नितरति रतिपति । मीतप्रीति सुखको दोऊअति
वायें विलसति गुननि अगाधा । श्री वृषभान कुमारी राधा ॥
सब जुवतनि में अति सुकुमारी । कनक बनक केसरि दुतिधारी ॥
लाल बसन तन लसन सु जोई । हिय अनुराग रंग्यो मनु साई ॥
बहुरि नीलपट अति निरदूषन । जगर जगर जग मग तन भूषना ॥
जुगल रूप लीला रस जोई । अलिगन निज नैननि भरि सोई ॥
जानि मांनि जिम जीवनि जीकै । हरषि हरषि पीवहि नित नीकै ॥
बेदरु विधिहि अबेद सुजिहि थल । रतन जटित सिंहासन पर भल
नितप्रति मन भावन सुभ जोरी । सेव हूँ नवल किसोर किसोरी ॥
अस दुल्लभ मानुष तन पायें । क्यों न भजहु हरिपद हरषायें ॥
नेक हूँ नेक विवेक जु नांही । अंध परत भव बंध सुमांही ॥१६२॥
आन क्रिया सु कर्म जिन करहूँ । बेद धर्म मग पग जिन धरहूँ ॥

करहु भक्ति मन क्रम अरु वैनां । हरि पदपल्लव में दिन रैनौ ॥
जानत हैहै विषै विषमगति । क्यों भजहु नितहित चित ब्रजपति ॥
नंद कुँवर जानहु निरधारा । नव गोविंद सरस सुख सारा ॥

आत मुक्ति जिहि कहत जग नांहीन सुभदा सोय ।
जा में हरिपद बिमुख जन रहें अपन पौ खौय ॥१९५॥

आत मुक्ति पद जोई । तिहि मग ढरहु न कोई ॥

जा में है निरधारा । बहुरि बहुरि संसारा ॥

नहि न खेम कर कै हूं । जानत निहचै मैं हूं ॥

भोगै नरक अपारा । फिरि फिरि जनम विकारा ॥

मीत नीति सुनि लिज्जै । निज तन में न पतिज्जै ॥

बुरी रीति किरतंता । दै है दंड अनंता ॥

आत कर्म गति जोई । है दुख सागर सोई ॥

धारा प्रबल अपारा । क्यों हूं वार न पारा ॥

सुनि सुनि कै पुनि आछैं । निरखि निरखि तिहि पाछैं ॥

संत ग्रन्थ मत मानौ । जुगल चरन रति ठानौ ॥२००॥

कर्म धर्म पुन जो है । प्रबल हलाहल सो है ॥

मुधा सुधारस भोरैं । पांन करहि जे थोरैं ॥

नाना जोनि भटकके । सोच अभच्छ गटकके ॥

तिनकौ जनम सुजानौ । अचल अधोगति मानौ ॥२०२॥

हरि राधा चरननि नाहीन रति । आन कौं जु भाषत करि निजपति
नीति छाड़ि विपरीति जु ठानै । प्रेमभक्ति की रीति न जानै ॥

क्यों ही भक्ति परम नहि जानै । भरमहि भरम ध्यान पुन ठानै ॥

अस नर खर जेहैं जग महि पुनि । तिनकौ जीवन व्यर्थ हैं जुसुनि ॥
जानि ज्ञान अज्ञानी भाखैं । कर्म धर्म हू दृढ़ तरि राखैं ॥

नाना मत महि है जु भ्रमित मति । नांहीन जानें भक्तिकी गति
कबहु न सुनि हों इनकी बातें । जानत हों परमारथ जात ॥

इहै तत्व निरधार जु मानौ । प्रेमभक्ति जन जीवनि जानौ ॥

गिरिधारी जग व्यापक भारी । अज त्रिपुरारी अज्ञाकारी ॥

मूरति मूरति वंत मधुर सुनि । लीला गाथा है सु ललित पुनि ॥

यहै तत्व जानत पुन जोई । परम सघर उत्तम नर सोई ॥

भरि उमंग तिनकौं संग करि । मन वच क्रम रहिहौं जु रंगभरि

नव गोविन्द चंद नवनागर । रस सागर वर रसिकनि आगर

तृषावंत तिहि पद निज मन दै । भजि भरि चाइ भाइ ब्रज जनलै ॥

रसिकनि की सतसंगति में दरि । रहि हों प्रीति रीति रंग भरि ॥

सजि अभिलाषरु तजि अन आसा । ब्रजपुरमें करि अचलनिवासा

हरषि हरषि अरु भरि भरि चाइनि । गुरुवर अरु हरिजनके पाइन

करि अरपन निजमन निरधारा । तिनही के जु गदित अनुसारा

मन वचक्रम अलिको मत संमत । हैहौं पुन तिनिकौं जु जूथ गत ॥

प्रेम मगन अति हिय हरषांही । सदा बिहरि हों ब्रजपुर मांही ॥

लीला ललित गान दिन रैनौ । जुगल किशोर अमल सुख ऐना ॥

जानि मानि निज जीवन जसैं । जाचहु भरि अभिलाष जु तैस ॥

जीवन मरन में जु सुनि लीजै । इहि दिन चहत न आन पतीजै ॥

दीन नरोत्तम की इह बानी । सुनहु प्रवीन संत सुख दाना ॥

आन कथा नहि सुन हूं अरु भनहुं न भोरैं आन ।

जो करि हौं अबगान सब परमारथ ही मान ॥२१५॥

निसदिन जाचहूँ धीठ है ईठ कथन महि लोभ ।

इहि विन छोभ सु आन जो मानहु अनरथ गोभ ॥२१६॥

ईसा तत्व महत्व सु जो है । ताहि भनै पुनि अस कवि को है ॥
 को जानै सो अमित अनन्ता । तातें सुनहुँ जु सुमति इकन्ता ॥
 ब्रजपुर प्रेम सु सत्य सरूपा । अनुचर निकर सनातन रूपा ॥
 तजि तजि आन मानि बड़भागी । भजिभजि मनक्रम है अनुरागी ॥
 नव गोविन्द गोकुल चंदा । सत्य सनातन तन सुख कंदा ॥
 छवि ओपी गोपी रु गोपगन । परिकर निकर लसहि जहँ अनगन ॥
 नंदग्राम जिहि धाम सुहावन । गिरिधारी जु नाम मन भावन ॥
 अलिनि संग हरषितसु अंगिकरि । ताहिसु भजहुँ उमंग रंग भरि ॥
 दसधा भक्ति तत्व पुन जोई । तोहि सुभ्रात कछौ ल सोई ॥
 करहु भजन गहि दृढ़ विसवासा । तजन करहु जे आन दुरासा ॥
 गुरु प्रसाद जब ही सुठि लहियै । यहै तत्व तब ही अब गहियै ॥
 दसधा भक्ति सुधारस रूपा । अलि अनुगति अति रहसि अनूपा ॥
 सफल भजन मग होय जु आछै । जब बिचरै हरि जन के पाछै ॥
 सुमरन भजन करत अविरामा । हरि लीला गाथा अभिरामा ॥
 प्रेमभक्ति रस सम अन नांही । प्रगट होय जब ही हिय मांही ॥
 तिहिं फल अचल होयमन निरमल । नसै पीर हियधीर सुनहु भल ॥
 विष विष महद विपद सुजानहु । पुनसंसार अनित चित मानहु ॥
 तजि हु मीत एहै प्रतिकूला । नर तन भजन कौं जु सुठि मूला ॥
 सदा भजहु अनुराग रगमगे । लीला गाथा प्रेम सगवगे ॥
 इहि बिन जान आन पुन जोई । है दुख मूर सूर हिय सोई ॥

पद पराग वृषभानुजा करि भूषण निज काय ।

आयसु मिलि हैं भाय भरि बिन अयास हरिराय ॥

चरन सरन वृषभानुजा जे करि हैं निरधारि ।

ते उदार आसै विसद तिहिं पद की बलिहारि ॥

जै जै राधा नाम जिहि वृन्दावन सुभ धाम ।

हरि सुख ललित विलास निधि अवधि लसति अभिराम ॥

अस राधा गुण श्रवननि मांही । भनक परी कहु तनकहू नांही ॥
 सदा रह्यौ हियरा दुख भीनौ । अस निधितें विधि मुखजु कीनौ ।
 राधा भक्त संग सुचिकारी । है जिनकी तामें रुचि भारी ॥
 प्रेम मगन तिहि लीला गाथा । गावहि पावहि हरि निज नाथा ॥
 यातें विमुख अधम नर जोई । अति असुद्ध विरुद्ध हिय सोई ॥
 कबहु न देखहु अस जन आनन । नाहिन सुनहु नामनिज कानन ॥
 भ्रात नाम हरि जब अब गहियै । बिन बाधा राधा पद लहियै ॥
 राधा नाम रटत सचु पायै । आय मिलहि हरि हू हरषाय ॥
 करि सछेप करी यहै बांनी । तजिहु जु पीर धीर सुख दांनी ॥
 इहि बिन आन गांन पुन जोई । जानि मांनि दुख खानि जु सोई ॥
 अहंकार अभिमान सदाई । हिंसक असतज्ञान दुखदाई ॥
 जौपै अभिलाखै जु खेम निज । तजिहु भजहु गुरुवर पद सरसिज ॥
 देहरु गेह सहित सुतदारा । गुरुपद पंकज में निरधारा ॥
 आतम अरपन करहुँ मित्रभल । मानि महत गुरुगदित जु निरमल ॥

नित प्रति अतिहित चित सुमति भजहु कृष्णचैतन्य ।

दसधा दानीं स्वच्छ इमि जिमि सुर वृद्धसु धन्य ॥

श्रीव्रजभूपति सुवन श्री राधा चित वित जोय ।

अचरज रहसि सरस यह लसत गौर वपु सोय ॥२३८॥

कुंवरि भाय करि अंगीकारा । तन दुति निज भूषण निरधारा ।
 नव गोविन्द चंद गिरिधारी । प्रगट अघट नदिया अवतारी ॥
 धारि मनोरथ न मन भावन । सची कूख वर उदधि सुहावन ॥

उदित सु मुदित गौरवर चंदा । परिकर निकर संग सुख कंदा ॥
 प्रगटि कृष्ण चैतन्य गौरवर । लायो घर घर प्रेमकौजु भर ॥
 मन भावन प्रभुवर बिन बाधा । पूरन कीनौ निज मन साधा ॥
 राधा प्राणनाथ पुनि जोई । रुदन करत किंहि हेत जु सोई ॥
 यहै अटपटी रीतिसु कबहि न । समझि सकै अन रसिक भक्तबिन
 साधन पुन नवधा निधि जोई । गुपतहि साधिहौंजु सिधि सोई ॥
 मन वच क्रम जाचहुँ निरधारा । अन्य त्याग करि दैन्य अपारा ॥
 कब हु न हिय धारहुँ क्योंहुँ अन । हरि कीरं तन करहुँ बिमलमन ॥
 भोरैं ऊँ नाहिन अन साधा । ईष्ट लहन बिन है सब बाधा ॥
 है सुवटपरा यह संसारा कालसु फाँसी में निरधारा ॥
 लेत वटोही जिय दै त्रासा । करऊं पुकार क्यों न हरि दासा ॥
 करि हरिजन संगत सुखकारी । प्रेमकथा रसरंग सुभारी ॥
 नित विचरहु तिनही के पाछैं । नसैं विपद गण अनगन आछैं ॥
 स्त्री पुरुषरु बालक जु ज्ञान हत । मरि मरि जांहि भ्रात ए सतसत
 सुन ऊं प्रीति भरि नीति जु तंता । निज खेमहि चिंतहु एकंता ॥
 नहिन विषै हत मो सौ दूजा । करी न क्योंहुँ हरि पद पूजा ॥
 यह निहचैं अब कीनौ मै हूँ । नहि न प्राण मम प्राणहि क्यों हूँ ॥
 रामचन्द्र कवि भूपति भारी । तिहि सत संगति मम सुखकारी ॥
 तिनके संग रंग बिन अहनिसि । मानत हौं सूनों जु दसौं दिसि ॥
 बहुरि जनम जौ होय सु ऐसैं । तिहि सत संगति मिलैं सु जैसैं ॥
 भ्रात बात यह आन ऊं मन में । तब हि नरोत्तम धन्यजु तन में ॥
 अपनी भजन रीति सुठि जोई । परम सुनीति पुनीति अति सोई ॥
 सो न कहौं जित तित सचु पायैं । अतिहितचित राखहुँजु दुरायैं
 जिन रुठहुँ कोऊ बलि जाहीं । धर हू दोष जिनि पुनि हिय मांहीं ॥
 अहो संत तुम हौ मम ईसा । ल नायौ तुम्हरे पद सीसा ।
 श्रीचैतन्य परम सुखदांनी । मोहि कहाई कही सुबानी ॥
 कहा कही पुन हे रस कंदा । जानत नाहिन भल अरु मंदा ॥२५३॥

लोकनाथ निजनाथ पद जिहि हिय विसद विलास ।
 प्रेमभक्ति रस चन्द्रिका रची नरोत्तमदास ॥२५४॥
 प्रेम रूप रस भूप श्री सुखद नरोत्तमदास ।
 प्रेमभक्ति सुठि चन्द्रिका कीनी लै परकास ॥
 सो वृन्दावन चन्द्र जिन दास विदित जग जोय ।
 सुमरि नरोत्तम पद कमल अतिहित चित रस भोय ॥
 भ्रमर कुंज रस पुंज मधि भान सुता के कूल ।
 नव राधा गोविंद जहँ जुग जुग जीबनि मूल ॥२५७॥
 प्रेम भक्ति रस चन्द्रिका सुखद ग्रंथ जो आहि ।
 अति उमंग हिय रंग भरि रसिकन के हित ताहि ॥२५८॥
 कीनी प्रेम प्रकासनी रचि सचि मति अनुरूप ।
 लेव हूँ चूक सुधारिकै रस कोविद कवि भूप ॥
 सोरठा—अधिक त्रयोदस जानि संवत सतदस आठ महि ।
 पूरण ग्रंथ सु मानि पूरा विदित सित पंचमी ॥२६०॥

इति श्री वृन्दावनदास जी कृत प्रेमभक्ति-
 चन्द्रिका भाषा सम्पूर्ण ।

अथ माध्वगौड़ेश्वर गुरु परम्परा

नारायण के विधि भये तिनके नारद जान ।
तिनके वेद व्यास जू राचे महा पुरान ॥
तिनके मध्वाचार्य जू भाष्यकार निरधार ।
भक्ति तत्व अति सुदृढ़ किय मायाबाद कुठार ॥
पद्मनाभ तिनके भये नरहरि तिनके दास ।
तिनके माधव जानिये तिनके लोभ प्रकास ॥
जय तीरथ तिनके भये बानी परम पवित्र ।
कहि टीका विजयध्वजी श्रीभागौत विचित्र ॥
ज्ञानसिंधु तिनके भये तासु महानिधि धन्य ।
तिनके विद्यानिधि भये गुरु गोपाल अनन्य ॥
तिनके भये राजेन्द्र जू तिनके भये जय धर्म ।
तिनके पुरुषोत्तम भये भजन बिना नहि कर्म ॥
तिनके भये ब्रह्मण्य जु तिनके तीरथ व्यास ।
तिनके लक्ष्मीपति भये माधवेन्द्र विश्वास ॥
तिनके ईश्वरचन्द्रजू नीकी विधि करि सेव ।
जग शिक्षा हित जगतगुरु जिनहि कियो गुरुदेव ॥
महाप्रभू चैतन्य कौ प्रथमहि नीमानंद ।
नाम प्रगट पाछें चली परनाली निरद्वन्द ॥
प्रथम चलनि याकी कहूँ ब्रह्म सम्प्रदानाम ।
मध्वाचार्य पय्यन्त सब संतन कह्यौ गुनग्राम ॥

संप्रदायबोधनी में श्रीमनोहरदास जी